

किशोरावस्था शिक्षा (Adolescence Education)

किशोरावस्था शिक्षा विद्यार्थियों को किशोरावस्था के बारे में जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता के सन्दर्भ में उभरी एक नवीन शिक्षा का नाम है। किशोरावस्था जो कि बचपन और युवावस्था के बीच का परिवर्तन काल है, को मानवीय जीवन की एक पृथक अवस्था के रूप में मान्यता केवल बीसवीं शताब्दी के अन्त में ही मिल पाई। हजारों सालों तक मानव विकास की केवल तीन अवस्थाएं - बचपन, युवावस्था और बुढ़ापा ही मानी जाती रही हैं। कृषि प्रधान व ग्रामीण संस्कृति वाले भारतीय व अन्य समाजों में यह धारणा है कि व्यक्ति बचपन से सीधा प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करता है। अभी तक बच्चों को छोटी आयु में ही प्रौढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्व को समझने और वहन करने पर बाध्य किया जाता रहा है। युवक पौढ़ पुरुषों के कामकाज में हाथ बँटाते रहे हैं और लड़कियाँ घर के। बाल विवाह की कुप्रथा तो बच्चों को यथाशीघ्र प्रौढ़ भूमिका में धकेल देती रही है। विवाह से पूर्व या विवाह होते ही बच्चों को यह मानने पर बाध्य किया जाता रहा है कि वे प्रौढ़ हो गये हैं।

लेकिन अब कई नवीन सामाजिक और आर्थिक धारणाओं की वजह से स्थिति में काफी परिवर्तन आ गया है। शिक्षा और रोजगार के बढ़ते हुए अवसरों के कारण विवाह करने की आयु भी बढ़ गई है। ज्यादा से ज्यादा बच्चे घरों और कस्बों से बाहर निकल कर प्राथमिक स्तर से आगे शिक्षा प्राप्त करते हैं। उनमें से अधिकतर शिक्षा व रोजगार की खोज में शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं। देश के अधिकतर भागों में बाल विवाह की घटनाएं न्यूनतम स्तर पर पहुंच गई हैं। लड़कियां भी बड़ी संख्या में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। जिसके फलस्वरूप वे भी शीघ्र ही वैवाहिक बंधन में बंधना नहीं चाहतीं। इस मानसिक परिवर्तन में संचार माध्यमों की भी महती भूमिका रही है। एक ओर विवाह की आयु में वृद्धि हो गई है और दूसरी ओर बच्चों में बेहतर स्वास्थ्य और पोषण सुविधाओं के कारण यौवनारम्भ निर्धारित आयु से पहले ही हो जाता है। इन परिवर्तनों के कारण बचपन और प्रौढ़ावस्था में काफी अन्तर पड़ गया है। इस कारण अब व्यक्ति की आयु में एक ऐसी लम्बी अवधि आती है जब उसे न तो बच्चा समझा जाता है और न ही प्रौढ़ का दर्जा दिया जाता है। जीवन के इसी काल को किशोरावस्था कहते हैं।

किशोरावस्था की परिभाषा (Definition of Adolescence)

किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी भाषा के **Adolescence** शब्द का हिंदी पर्याय है। **Adolescence** शब्द का उद्भव लेटिन भाषा से माना गया है जिसका सामान्य अर्थ है बढ़ना या विकसित होना। बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था तक के महत्वपूर्ण परिवर्तनों जैसे शारीरिक, मानसिक एवं अल्पबौद्धिक परिवर्तनों की अवस्था किशोरावस्था है। वस्तुतः किशोरावस्था यौवनारम्भ से परिपक्वता तक वृद्धि एवं विकास का काल है। 10 वर्ष की आयु से 19 वर्ष तक की आयु के इस काल में शारीरिक तथा भावात्मक रूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक इसे 13 से 18 वर्ष के बीच की अवधि मानते हैं, जबकि कुछ की यह धारणा है कि यह अवस्था 24 वर्ष तक रहती है। लेकिन किशोरावस्था को निश्चित अवधि की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। यह अवधि तीव्र गति से होने वाले शारीरिक परिवर्तनों विशेषतया यौन विकास से प्रारम्भ हो कर प्रजनन परिपक्वता तक की अवधि है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यह गौण यौन लक्षणों (यौवनारम्भ) के प्रकट होने से लेकर यौन एवं प्रजनन परिपक्वता की ओर अग्रसर होने का समय है जब व्यक्ति मानसिक रूप से प्रौढ़ता की ओर अग्रसर होता है और वह सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत आत्म-निर्भर हो जाता है जिससे उसकी समाज में अपनी एक अलग पहचान बनती है।

किशोरवस्था तीव्र शारीरिक, भावनात्मक और व्यवहार सम्बन्धी परिवर्तनों का काल है। यह परिवर्तन शरीर में उत्पन्न होने वाले कुछ हार्मोनों के कारण आते हैं जिनके परिणाम स्वरूप कुछ एक ग्रन्थियाँ एकाएक सक्रिय हो जाती हैं। ये सब परिवर्तन यौन विकास के साथ सीधे जुड़े हुए हैं क्योंकि इस अवधि में गौण यौन लक्षणों के साथ-साथ बहुत महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन होते हैं। किशोर बात-बात में अपनी अलग पहचान का आग्रह करते हैं और एक बच्चे की तरह माता-पिता पर निर्भर रहने की अपेक्षा एक प्रौढ़ की तरह स्वतन्त्र रहना चाहते हैं। वे अपने माता-पिता से थोड़ा दूरी बनाना शुरू कर देते हैं और अपने सम-आयु समूह (**Pear Group**) में ही अधिकतर समय व्यतीत करने लगते हैं। यौन-उर्जस्विता के कारण वे विपरीत लिंग की ओर आकर्षित होते हैं। इस प्रकार किशोरावस्था का मानव जीवन में एक विशिष्ट स्थान है।¹

1 किशोरवस्था की वृद्धि प्रक्रिया और प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य पर विस्तृत जानकारी हेतु देखें: स्कूलों में किशोर शिक्षा : मूल सामग्री का संवेष्टन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली-1999

किशोरावस्था की समस्याएं

(Problems of Adolescence)

किशोरावस्था एक ऐसी संवेदनशील अवधि है जब व्यक्तित्व में बहुत महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। वे परिवर्तन इतने आकस्मिक और तीव्र होते हैं कि उनसे कई समस्याओं का जन्म होता है। यद्यपि किशोर इन परिवर्तनों को अनुभव तो करते हैं पर वे प्रायः इन्हें समझने में असमर्थ होते हैं। अभी तक उनके पास कोई ऐसा स्रोत उपलब्ध नहीं है जिसके माध्यम से वे इन परिवर्तनों के विषय में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर सकें। किन्तु उन्हें इन परिवर्तनों और विकास के बारे में जानकारी चाहिए, इसलिए वे इसके लिए या तो सम-आयु समूह की मदद लेते हैं, या फिर गुमराह करने वाले सस्ते साहित्य पर निर्भर हो जाते हैं। गलत सूचनाएं मिलने के कारण वे अक्सर कई भ्रान्तियों का शिकार हो जाते हैं जिससे उनके व्यक्तित्व विकास पर कुप्रभाव पड़ता है।

किशोरों को इसलिए भी समस्याएं आती हैं क्योंकि वे विपरीत लिंग के प्रति एकाएक जागृत रुचि को ठीक से समझ नहीं पाते। मां बाप से दूर हटने की प्रवृत्ति और सम-आयु समूह के साथ गहन मेल-मिलाप भी उनके मन में संशय और चिंता पैदा करता है। किन्तु परिजनों के उचित मार्गदर्शन के अभाव में उन्हें सम-आयु समूह की ही ओर उन्मुख होना पड़ता है। प्रायः देखा गया है कि किशोर सम-आयु समूह के दबाव के सामने विवश हो जाते हैं और उन में से कुछ तो बिना परिणामों को सोचे अनुचित कार्य करने पर मजबूर हो जाते हैं। कुछ सिगरेट, शराब, मादक द्रव्यों का सेवन करने लगते हैं और कुछ यौनाचार की ओर भी आकर्षित हो जाते हैं और इस सब के पीछे सम-आयु समूह का दबाव आदि कई कारण हो सकते हैं।

किशोरावस्था की प्रवृत्तियाँ एवम् लक्षण

मानव विकास की चार अवस्थाएं मानी गई हैं बचपन, किशोरावस्था, युवावस्था और प्रौढ़ावस्था। यह विकास शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप में होता रहता है। किशोरावस्था सबसे अधिक परिवर्तनशील अवधि है। किशोरावस्था के निम्नलिखित महत्वपूर्ण लक्षण इसकी अन्य अवस्थाओं से भिन्नता को प्रकट करते हैं-

क) शारीरिक परिवर्तन

किशोरावस्था में तीव्रता से शारीरिक विकास और मानसिक परिवर्तन होते हैं। विकास की प्रक्रिया के कारण अगों में भी परिवर्तन आता है, जो व्यक्तिगत प्रजनन परिपक्वता को प्राप्त करते हैं। इनका सीधा सम्बन्ध यौन विकास से है।

ख) मनोवैज्ञानिक परिवर्तन

किशोरावस्था मानसिक, भौतिक और भावनात्मक परिपक्वता के विकास की भी अवस्था है। एक किशोर, छोटे बच्चे की तरह किसी दूसरे पर निर्भर रहने की अपेक्षा, प्रौढ़ व्यक्ति की तरह स्वतन्त्र रहने की इच्छा प्रकट करता है। इस समय किशोर पहली बार तीव्र यौन इच्छा का अनुभव करता है, इसी कारण विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित रहता है। इस अवस्था में किशोर मानसिक तनाव से ग्रस्त रहता है यह अवस्था अत्यन्त संवेदनशील मानी गई है।

ग) सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन

किशोरों में सामाजिक-सांस्कृतिक मेलजोल के फलस्वरूप कुछ और परिवर्तन भी आते हैं। सामान्यतः समाज किशोरों की भूमिका को निश्चित रूप से परिभाषित नहीं करता। फलस्वरूप किशोर बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य अपने को असमंजस की स्थिति में पाते हैं। उनकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समाज द्वारा महत्त्व नहीं दिया जाता, इसी कारण उनमें क्रोध, तनाव एवम् व्यग्रता की प्रवृत्तियां उत्पन्न होती हैं। किशोरावस्था में अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा उत्तेजना एवम् भावनात्मकता अधिक प्रबल होती है।

व्यावहारिक परिवर्तन

उपर्युक्त परिवर्तनों के कारण किशोरों के व्यवहार में निम्न लक्षण उजागर होते हैं -

अ) स्वतन्त्रता

शारीरिक, मानसिक और सामाजिक परिपक्वता की प्रक्रिया से गुजरते हुए किशोरों में स्वतन्त्र रहने की प्रवृत्ति जागृत होती है। जिससे वे अपने आप को प्रौढ़ समाज से दूर रखना प्रारम्भ करते हैं।

आधुनिक युग का किशोर अलग रूप से ही अपनी संस्कृति का निर्माण करना चाहता है जिसे उप संस्कृति का नाम दिया जा सकता है। यह उप-संस्कृति धीरे-धीरे समाज में विद्यमान मूल संस्कृति को प्रभावित करती है।

ब) पहचान

किशोर हर स्तर पर अपनी अलग पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते हैं। वे अपनी पहचान बनाए रखने के लिए लिंग भेद तथा अपने को अन्य से उच्च एवम् योग्य दर्शाने के प्रयास में होते हैं।

स) घनिष्ठता

किशोरावस्था के दौरान कुछ आधारभूत परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन अधिकतर यौन सम्बन्धों के क्षेत्र के होते हैं। किशोरों में अचानक विपरीत लिंग के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। वे आकर्षण एवम् प्रेम के मध्य अन्तर स्पष्ट नहीं कर पाते और मात्र शारीरिक आनन्द एवम् सन्तुष्टि के लिए सदैव भटकते रहते हैं।

समवय समूहों पर निर्भरता

अपनी पहचान व स्वतन्त्रता को बनाए रखने के लिए, किशोर अपने माता-पिता के भावनात्मक बन्धनों को त्याग कर अपने मित्रों के साथ ही रहना पसन्द करते हैं। परन्तु समाज लड़के-लड़कियों के स्वतन्त्र मेलजोल को स्वीकृत नहीं करता। किशोरों का प्रत्येक वर्ग अपने लिंग से सम्बन्धित एक अलग समूह बनाकर अलग में

रहना पसन्द करता है। इस तरह की गतिविधियां उन्हें समवय समूहों पर निर्भर रहने के लिए प्रोत्साहित करती है। यहीं से ही वे अपने परिवर्तित व्यवहार के प्रति समर्थन एवम् स्वीकृति प्राप्त करते हैं।

बुद्धिमता

बौद्धिक क्षमता का विकास भी किशोरों के व्यवहार से प्रदर्शित होता है। उनमें तथ्यों पर आधारित सोच-समझ व तर्कशील निर्णय लेने की क्षमता उत्पन्न होती है। ये सभी कारण उनमें आत्मानुभूति को विकसित करते हैं।

विकास की अवस्थाएं

किशोरावस्था के तीन चरण हैं -

- क) पूर्व किशोरावस्था
- ख) मूल किशोरावस्था
- ग) किशोरावस्था का अन्तिम चरण।

यहां यह ध्यान देने योग्य है कि विकास निर्धारित नियमानुसार ही नहीं होता इसी कारण तीनों चरण एक-दूसरे की सीमाओं का उल्लंघन करते हैं।

क) पूर्व किशोरावस्था

विकास की यह अवस्था किशोरावस्था का प्रारम्भिक चरण है। पूर्व किशोरावस्था के इस चरण में शारीरिक विकास अचानक एवम् स्पष्ट झलकता है। यह परिवर्तन विभिन्न किशोरों में भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। इस समय टाँगों और भुजाओं की लम्बी हड्डियों का विकास तीव्रता से होता है। किशोर की लम्बाई 8 से 9 इंच तक प्रतिवर्ष बढ़ सकती है। लिंग-भेद के कारण लम्बाई अधिक बढ़ती है। इस समय किशोर तीव्र सामाजिक विकास और अपने में गतिशील यौन विकास का अनुभव करते हैं। वे अपने समवय समूहों में जाने की चेष्टा करते हैं। इस स्तर पर प्यारे दोस्तों का ही महत्त्व रह जाता है। किशोर अपने-अपने लिंग से सम्बन्धित समूहों का निर्माण करते हैं। यौन सम्बन्धित सोच एवम् यौन प्रदर्शन इस स्तर पर प्रारम्भ हो जाता है। कुछ अभिभावक इस सामान्य व्यवहार को स्वीकृत नहीं करते और किशोरों को दोषी ठहराते हैं। विकास के इस चरण में शारीरिक परिवर्तन से किशोर प्रायः घबरा जाते हैं।

वे सामाजिक- सांस्कृतिक सीमाओं और यौन इच्छाओं के मध्य सन्तुलन बनाने का प्रयास करते हैं।

किशोरावस्था का द्वितीय चरण

किशोरावस्था का यह चरण शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक क्षमताओं के विकास को दर्शाता है। इस चरण में यौन लक्षणों का विकास जारी रहता है तथा प्रजनन अंग, शुक्राणु उत्पन्न करने में सक्षम हो जाते हैं। इस समय किशोर अपने को अभिभावकों से दूर रखने का प्रयास करते हैं। वह प्रायः आदर्शवादी बनते हैं और यौन के विषय में जानने की उनकी रुचि निरन्तर बढ़ती रहती है। किशोर के विकास का यह चरण प्रयोग और साहस से भरा होता है। प्रत्येक किशोर अपने से विपरीत लिंग और समवय समूहों से सम्बन्ध रखना चाहता है। किशोर इस चरण में समाज में अपने अस्तित्व को जानना चाहता है और समाज को अपना योगदान देना चाहता है। किशोर की मानसिकता इस स्थिति में और अधिक जटिल बन जाती है। उसकी भावना गहरी और घनिष्ठ हो जाती है और उनमें निर्णय लेने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है।

किशोरावस्था का अन्तिम चरण

किशोरावस्था के इस चरण में अप्रधान यौन लक्षण भली प्रकार से विकसित हो जाते हैं और यौन अंग प्रौढ़ कार्यकलाप में भी सक्षम हो जाते हैं। किशोर समाज में अपनी अलग पहचान और स्थान प्राप्ति की आकांक्षा रखता है। उनकी यह पहचान बाहरी दुनिया के वास्तविक दृश्य से अलग ही होती है। इस समय उनका समवय समूह कम महत्त्व रखता है क्योंकि अब मित्रों के चयन की प्रवृत्ति अधिक होती है।

किशोर इस समय अपने जीवन के लक्ष्य को समक्ष रखता है। हालांकि आर्थिक रूप से वह कई वर्षों तक अभिभावकों पर ही निर्भर करता है। इस चरण में किशोर सही व गलत मूल्यों की पहचान करता है तथा उसके अंदर नैतिकता इत्यादि भावनाओं का विकास होता है। इस समय किशोर अपना भविष्य बनाने के अभिलाषी होते हैं। उपर्युक्त कार्य के लिए वे अभिभावकों एवम् समाज का समर्थन चाहते हैं ताकि उनके द्वारा अपेक्षित कार्यों का संपादन हो।

शारीरिक विकास

किशोरावस्था वयःसंधि से प्रजनन परिपक्वता तक की अवधि है। इस समय तीव्र शारीरिक विकास होता है। वयःसंधि की परिभाषा कर पाना कठिन है। शब्द-कोष में उल्लिखित इसका अर्थ- “जब यौन परिपक्वता प्राप्त होती है”, पर्याप्त नहीं है। इसका सामान्य अर्थ है, यौन परिपक्वता का प्रथम चिह्न। इस समय किशोर जिस अवस्था से गुजरता है उसे यौन प्राप्ति का समय कह सकते हैं। इस समय से जो शारीरिक परिवर्तन प्रारम्भ होता है वह अन्ततः वयःसंधि का रूप धारण करता है। मस्तिष्क में हाईपोथैलमस ग्रन्थि इस समय पिचुएटरी ग्रन्थि को वश में रखती है। इस समय अचानक इन ग्रन्थियों में गतिविधियों के बढ़ने के कारण यौन हारमोन्स उत्पन्न होते हैं।

ये हारमोन्स किशोरियों में प्रोजेस्ट्रोज, इस्ट्रोजन तथा किशोरों में टैस्टोस्ट्रोन के रूप में उत्पन्न होते हैं। हारमोन्स में परिवर्तन के कारण किशोर एवम् किशोरियों में दूसरे चरण की यौन प्रवृत्तियों का विकास होता है। शारीरिक विकास का कार्य और परिवर्तन हारमोन्स परिवर्तन के कारण होता है। यह परिवर्तन सभी किशोर एवम् किशोरियों में एक जैसा नहीं होता। परन्तु फिर भी किशोर एवम् किशोरियों में शारीरिक परिवर्तन का एक क्रम है जो कि पुरुष एवम् महिला शारीरिक विकास संरचना के रूप में देखा जा सकता है।

पुरुष शारीरिक विकास एवम् संरचना

वयः संधि

साधारणतः वयःसंधि 10 से 11 वर्षों से प्रारम्भ होती है। वयःसंधि का प्रारम्भ किशोरों में किशोरियों की अपेक्षा 2 वर्ष पश्चात होता है। इसकी सीमा 9 से 15 वर्षों तक मानी जाती है। किशोरियां किशोरों की अपेक्षा 2 वर्ष पूर्व लम्बाई प्राप्त कर लेती है और किशोर किसी एक वर्ष में अधिकतम 3” से 5” तक बढ़ सकता है। 16 वर्ष की आयु तक एक किशोर की औसतन लम्बाई 98 प्रतिशत तक पहुँच जाती है।

परिवर्तनों का क्रम

क) अंडकोष और बीजकोष का बढ़ना

वयःसंधि के प्रारम्भिक चरण में अंडकोष बढ़ जाता है। 10 से 13½ वर्षों तक अंडकोष बढ़ने की प्रक्रिया जारी रहती है और कई बार यह प्रक्रिया 14½ से 18 वर्षों तक चलती है। पुरुष की प्रजनन ग्रन्थि शुक्राणु है वयःसंधि के प्रारम्भ में अंडकोष में सारे शुक्राणु एकत्र नहीं होते।

ख) गुप्तांगों पर बाल

वयःसंधि के प्रारम्भ में ही गुप्तांगों पर बाल उभरते हैं। यह 10 से 15 वर्षों की आयु के मध्य की प्रक्रिया है। लिंग के नीचे अव्यवस्थित एवम् अधिक काले वर्ण के बाल उगते हैं। पुरुष में प्रथम स्वलन की औसत आयु 14 वर्ष मानी गई है।

ग) विकास एवम् उभार में शीघ्रता

साधारणतः विकास 10 से 14 वर्षों तक ही होता है। विकास की अन्तिम सीमा 12 से 16 वर्षों तक की है। कुछ किशोर जिनमें विकास अन्तिम सीमा के समीप प्रारम्भ होता है उन्हें सन्देह रहता है कि उनका शारीरिक विकास होगा या नहीं। इसके लिए उन्हें समर्थन व आश्वासन की आवश्यकता होती है।

घ) आवाज में परिवर्तन

किशोरों में आवाज का परिवर्तित होना महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक है। किशोर की आवाज का भारी होना प्रायः धीरे-धीरे होने वाली प्रक्रिया है।

ङ) बगल में बालों का उगना

वयःसंधि के कुछ वर्षों पश्चात् किशोरों के बगल में बाल उत्पन्न होते हैं। यह परिवर्तन शरीर और चेहरे पर उगने वाले बालों के साथ ही होता है।

च) तैलीय एवम् पसीने की ग्रन्थियाँ

तैलीय एवम् पसीने की ग्रन्थियों में विकास के कारण चेहरे पर मुंहासे दिखाई देते हैं। पसीने की ग्रन्थियाँ बढ़ जाती है।

छ) चेहरे पर बाल

चेहरे पर बाल आना महत्वपूर्ण परिवर्तन है क्योंकि समाज में यह पुरुषत्व का प्रतीक है। चेहरे के बाल भी बगल के बालों के साथ ही उत्पन्न होते हैं। चेहरे पर बाल आने का एक निश्चित क्रम है। सबसे पहले ऊपर के होंठ के किनारों पर बाल उगते हैं तत्पश्चात् फैलकर मुँहों का रूप धारण करते हैं। इसके बाद गालों पर तथा निचले होंठ के नीचे और फिर ये बाल ठोड़ी के निचले भाग में फैल जाते हैं।

महिला शरीर का विकास एवम् संरचना

वयःसंधि

लड़कियों में वयःसंधि 8 से 12 वर्ष की आयु में प्रारम्भ होती है तथा 16 वर्ष तक वयः संधि की प्रक्रिया होती है। वयःसंधि किशोरियों में किशोरों की अपेक्षा 2 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हो जाती है। यह महत्वपूर्ण बात है कि जन्म से ही अस्थिपिंजर तथा स्नायु प्रणाली लड़कों की अपेक्षा थोड़ी ज्यादा परिपक्व होती है और इसका विकास युवावस्था तक धीरे-धीरे होता है।

परिवर्तनों का क्रम

क) स्तन विकास

वयःसंधि के साथ ही किशोरियों में स्तन विकास प्रारम्भ हो जाता है। ये 8 से 13 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होता है और 13 से 18 वर्षों तक पूरा होता है। इस विकास का किशोरियों पर मानसिक प्रभाव होता है। इसी कारण वे इनके आकार के विषय में चिन्तित रहती हैं। यह महत्वपूर्ण है कि स्तन विकास विभिन्न किशोरियों में भिन्न-भिन्न होता है। एक किशोरी में इसके असन्तुलित आकार के विषय में भ्रम हो सकता है परन्तु यह अन्तर समय के साथ विकास पूर्ण होने पर समाप्त हो जाता है।

ख) श्रोणी अथवा कूल्हे की हड्डी का विकास

लड़कियों के कूल्हे की बाहरी हड्डी जन्म से ही चौड़ी होती है। बच्चे को स्वाभाविक रूप से ग्रहण करने के लिए इससे सहायता मिलती है। इस हड्डी के विकास की प्रक्रिया में पहले कूल्हे की अन्दरूनी हड्डी चौड़ी हो जाती है तथा धीरे-धीरे कूल्हे चौड़े हो जाते हैं।

ग) विकास में तेजी

लड़कियों में विकास प्रक्रिया 10 से 12 वर्षों में प्रारम्भ होती है और लगभग 14 वर्ष तक चरमसीमा पर पहुँचती है। इसके अतिरिक्त 18 वर्ष की आयु तक ही दृश्यमान विकास हो पाता है। क्योंकि लड़कियों के यौवन का 98 प्रतिशत विकास औसतन 14 वर्ष की आयु में पूरा हो जाता है।

घ) गुप्तांगों पर बाल उगना

गुप्तांगों पर बाल आने की प्रक्रिया 11 से 12 वर्षों की आयु में आरम्भ होती है तथा 14 वर्ष की आयु में ये प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है। लम्बाई में अधिकतम विकास के पश्चात् ही अव्यवस्थित गुप्तांग बाल दिखाई देते हैं। ये विकास दर्शाता है कि पहला मासिक धर्म 6 महीने से 1 वर्ष के मध्य होने वाला है।

ङ) प्रथम मासिक धर्म

मासिक धर्म एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो प्रत्येक मास के पश्चात् प्रत्येक महिला को होती है। ये स्वस्थ शरीर की सामान्य प्रक्रिया है। (औवरी) अंडाशय में अण्डे पैदा होते हैं। एक अण्डा हर महीने में परिपक्व एवम् तैयार होकर अण्डाशय से निकलता है। अण्डा डिम्ब नली (फैलोपियन ट्यूब) से होकर गर्भाशय में पहुँचता है यदि ये रास्ते में शुक्राणु से मिल जाए तो फलित(फर्टिलाइज) हो जाता है। इससे गर्भाधान होता है। यदि ये फलित न हो तो गर्भाशय की भीतरी पर्त टूट जाती है और मासिक धर्म के रूप में रक्त प्रवाहित होने लगता है। मासिक धर्म में रक्त और गाढ़े रक्त के टुकड़े होते हैं।

सामान्यतः पहला मासिक धर्म 9 से 18 वर्ष की आयु के मध्य में होता है। भारत में पहले मासिक धर्म की औसत आयु 13 वर्ष थी, परन्तु ये धीरे-धीरे और

भी कम होती जा रही है। शुरु में मासिक धर्म का यह चक्र अधिक अनियमित हो सकता है। वर्तमान प्रचलन दर्शाता है कि आने वाली पीढ़ियाँ सामान्यतः कद में ऊँची हो रही हैं और वयःसंधि को जल्दी प्राप्त कर रही हैं। सन् 1900 ई. में सम्पूर्ण विश्व में पहले मासिक धर्म की औसत आयु 14 वर्ष थी। आज यह आयु घट कर 12.8 वर्ष हो गई है। इसका कारण लड़कियों का अच्छा पोषण व अच्छा स्वास्थ्य स्तर है।

च) बगल तथा शरीर में बालों का आना

किशोरियों में एक अन्य परिवर्तन बगल के बालों का आना है। शरीर पर बालों की मात्रा का अधिक या कम होना प्रत्येक किशोरी के वंश पर निर्भर करता है।

छ) तैलीय तथा पसीना उत्पन्न करने वाली ग्रन्थियाँ

इन ग्रन्थियों के सक्रिय होने के पश्चात् किशोरी के चेहरे पर मुहांसे और शरीर पर पसीने की गन्ध आनी शुरु होती है।

ज) गर्भाशय और योनि का पूर्ण विकास

यद्यपि गर्भाशय तथा योनि की वृद्धि तथा विकास जल्दी प्रारम्भ हो जाता है परन्तु इसका पूर्ण विकास काफी समय पश्चात् होता है। गर्भाशय की मांसपेशी की परत बड़ी तथा विस्तृत हो जाती है। इसकी बनावट गर्भावस्था के समय भ्रूण का विकास तथा बच्चे के पैदा होने के अनुकूल होती है। गर्भाशय की भीतरी परत (एण्डोमैटरियम) में मासिक धर्म चक्र के समय परिवर्तन आता है। योनि बड़ी हो जाती है तथा इसकी परत मोटी हो जाती है। योनि स्त्राव जो कि वयःसंधि के समय क्षारीय होता है गर्भाशय और योनि के पूर्ण विकास के पश्चात् ये अम्लीय बन जाता है।

इसमें लगभग 5 लाख अविकसित अण्डे होते हैं जो कि परिपक्व होने योग्य होते हैं। स्त्री के अण्डाशय में जन्म के समय से ही सारे अण्डे बने रहते हैं जो कि लगभग 4 लाख के लगभग होते हैं। वयःसंधि से पूर्व तथा अण्डे निकलने तक यह अण्डे (फैलीकल) अविकसित रह जाते हैं। हर महीने अण्डाशय में से केवल एक अण्डा बाहर निकलकर डिम्बनली में प्रवेश करता है।

इन शारीरिक परिवर्तनों के कारण किशोरियों में प्रायः लज्जा, भय, उकताहट एवं आत्मविश्वास की कमी आदि भावों का उदय होता है।

1. लज्जा

यौन अंगों के विकास के साथ-साथ किशोरियों की भावनाओं में बदलाव आता है। क्यों, कैसे, किसलिए तथा दूसरे लोग क्या सोचेंगे जैसी जिज्ञासाओं का समाधान न हो पाने के कारण उनमें संकोच एवं लज्जा का भाव भर जाता है।

2. भय

किशोरियों के शारीरिक परिवर्तनों की तीव्र गति उन्हें आश्चर्यचकित कर देने वाली होती है। लज्जा के कारण इस सम्बन्ध में जिज्ञासा एवं अज्ञान को मिटाने का कोई उचित स्रोत उन्हें नहीं मिल पाता अतः वे अक्सर भय ग्रस्त रहती हैं। उस स्थिति में विशेष तौर पर उनका भय अधिक बढ़ जाता है जब उन्हें लगे कि यौन अंगों के विकास की गति अत्यधिक धीमी है या फिर न के बराबर है।

3. उकताहट

किशोरावस्था में मन चंचल हो उठता है। पंख लगाकर उड़ने लगता है। दुनिया से बेखबर अपने ही ख्यालों में खोए रहने के कारण विभिन्न कार्यों में अरुचि भी पैदा हो जाती है। कई बार स्वभाव में खीझ या चिड़चिड़ापन झलकने लगता है।

4. आत्मविश्वास की कमी

लज्जा, भय, उकताहट तथा तथ्यहीन तर्कों के कारण किशोरियों में आत्मविश्वास की कमी झलकने लगती है। फलतः जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण निराशाजनक हो जाता है।

गर्भधारण अथवा गर्भावस्था

शारीरिक वृद्धि और विकास एक विकासमान प्रक्रिया है जो महिला एवम् पुरुष को प्रजनन के लिए सक्षम बनाती है। प्रजनन प्रणाली मानव जीवन को गतिशील बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। प्रजनन प्रणाली के विषय में हम विद्यालय में पाठ्य पुस्तकों के माध्यम से कुछ ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं। परन्तु इन पुस्तकों में गर्भाधान तथा गर्भावस्था की जानकारी बहुत कम उपलब्ध है।

गर्भाधान : संभोग की प्रक्रिया से

पुरुष के शुक्राणु और महिला के अण्डों के मिलाप से नवजीवन प्रारम्भ होता है। ये मिलन गर्भाधान का रूप धारण करता है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि महिला के अण्डाशय से एक परिपक्व अण्डा निकलता है जो डिम्ब नली के द्वारा गर्भाशय तक पहुँचता है। डिम्ब नली शुक्राणु और अण्डे का मिलन होता है। तत्पश्चात् फलीकृत अण्डा डिम्ब नली से गर्भाशय में पहुँच जाता है और वहाँ स्थान ग्रहण कर लेता है। गर्भाधान के समय माता-पिता के जींस तथा क्रोमोसोम की अलग-अलग विशेषताएं निर्धारित होती हैं।

बच्चे के लिंग का निर्धारण

यह जानना परमावश्यक है कि मानव शरीर में 23 X 2 (46) क्रोमोसोम हैं। शुक्राणु तथा अण्डे में भी 23-23 क्रोमोसोम होते हैं। शुक्राणु में X तथा Y दोनो क्रोमोसोम ही होता है। यदि अण्डा (जिसमें X क्रोमोसोम ही होता है) शुक्राणु X में Y तथा क्रोमोसोम के मिलकर फलीकृत होता है तो निश्चित रूप से लड़का पैदा होता है। इसके विपरीत यदि अण्डा शुक्राणु के X क्रोमोसोम से फलीकृत होता है तो निश्चित ही लड़की पैदा होती है। अर्थात् बच्चे के लिंग का निर्धारण पुरुष शुक्राणु पर निर्भर करता है न कि महिला के अण्डे पर।

शारीरिक परिवर्तन असहज नहीं अपितु विकास प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा है

किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक परिवर्तन आरम्भिक चरण में आश्चर्यजनक प्रतीत हो सकते हैं किन्तु यह असहज नहीं हैं। प्राकृतिक रुख मानव विकास की प्रक्रिया का स्वाभाविक एवं अनिवार्य हिस्सा है। इन परिवर्तनों को स्वीकारने में ही भलाई है। इसमें न तो लज्जा जैसी कोई बात है और न ही भयभीत होने की आवश्यकता। किशोरियों को चाहिए कि वे इस स्थिति में अपना आत्मविश्वास कदापि न खोएं। अपने माता, बहन, भाभी या अभिभावक में से जिसे आप विश्वसनीय समझती हों, उनके सामने अपने मन में उभरने वाले प्रश्नों को निःसंकोच रखने में न हिचकिचाएं।

- इस सम्बन्ध में सम-वयस्क सखी-सहेलियों का अधकचरा ज्ञान अहितकर हो सकता है।
- आवश्यकता महसूस हो तो सम्बन्धित विषय के विश्वसनीय विशेषज्ञ की राय लेना ज्यादा समझदारी पूर्ण होगा।

सामाजिक परिवर्तन

किशोरावस्था में किशोरियों में सामान्यतः निम्नलिखित सामाजिक परिवर्तन लक्षित होते हैं :-

- किशोरियां स्वयं को समाज का अंग मानने लगती हैं।
- सामाजिक क्रिया-कलापों में अपनी पहचान बनाने की उत्सुकता रहती है।
- स्वयं को सामाजिक रीतियों के अनुरूप ढालने के साथ-साथ उन रीतियों में तात्कालिक परिवर्तन की इच्छा भी रहती है।
- व्यक्तिगत नेतृत्व, प्रतियोगिता की भावना तथा सहयोग की भावना का विकास होता है।
- अपने भविष्य के प्रति जागरूक हो जाती हैं तथा रोजगार एवं नए क्षेत्रों की तलाश में रहती हैं।
- अपने लिए कुछ सिद्धान्तों एवं मूल्यों का निर्धारण तथा दूसरों के प्रति दृष्टिकोण निश्चित करती हैं।

- बड़ों से अपनी सराहना तथा अपने विचारों के प्रति उनकी सहमति की अपेक्षा रखती है।

संवेगात्मक परिवर्तन

किशोरावस्था में किशोरियां अत्यधिक भावुक एवं संवेदनशील हो जाती हैं। उनमें चिन्ता, व्यग्रता, भय, क्रोध, प्यार आदि संवेगात्मक परिवर्तन होने लगते हैं फलतः विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण, मित्रता, लगाव बढ़ता है। संवेगात्मक परिवर्तन उनके व्यक्तित्व के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं यदि उनकी भावात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति ठीक ढंग से न हुई तो उनमें मानसिक तनाव, काल्पनिक भय, क्रोध, अनिर्णय आदि की हानिकारक स्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं जिसके कारण उनका व्यक्तित्व निखरे बिना ही रह जाता है। यदि इन संवेगात्मक परिवर्तन की स्थिति में उन्हें उचित मार्गदर्शन मिल सके तो यही संवेगात्मक परिवर्तन सकारात्मक दिशा की ओर उन्मुख होकर किशोरियों को सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मालिक बना देते हैं।

मानसिक परिवर्तन

- मन में द्वंद्व एवं विचारों में उथल-पुथल मचना।
- स्वाभिमान की भावना का उत्पन्न होना।
- अपने विचारों तथा दृष्टिकोण के महत्त्व को स्वीकृति प्राप्त करने की आकांक्षा जागृत होना।
- माता-पिता से अलग संगी-साथियों के साथ समय बिताने और बाहर घूमने की इच्छा।
- बातें छिपाना, बेबुनियाद आशंकाओं एवं हीन भावना की ग्रथियों में ग्रसित हो जाना।

वास्तव में किशोरावस्था का दौर अत्यधिक नाजुक दौर होता है। इस अवस्था में उनके गुणों के विकास के लिए उचित मार्गदर्शन तथा उनके भावों के सम्मानपूर्ण संरक्षण की नितान्त आवश्यकता होती है। इसके अभाव में वे मात्र दिवास्वपनदर्शी बन कर रह जाती है और गलत धारणाओं का शिकार होकर सामाजिक कुरीतियों की सहभागी बन जाती हैं।

अतः किशोरियों के माता-पिता तथा अभिभावकों के लिए आवश्यक हो जाता है कि वे अपने बच्चों में किशोरावस्था में हुए उनके शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा मानसिक परिवर्तनों की मांग को ध्यान में रखते हुए उनसे मित्रवत् सद्भावनापूर्ण व्यवहार करें तथा उनके गुणों के विकास के लिए हर सम्भव अनुकूल अवसर प्रदान करने की चेष्टा करें।

सामाजिक सांस्कृतिक विकास और किशोरावस्था

किशोरावस्था में तीव्र शारीरिक भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आते हैं जो कि सामाजिक वातावरण को प्रभावित करते हैं और यह बदला वातावरण उल्टे किशोरों को भी प्रभावित करता है। कुछ सीमा तक समाज में सभी किशोर-किशोरियों को बाल्यावस्था के बाद बड़ा मान लिया जाता है परन्तु उन्हें अपनी भूमिका का ज्ञान नहीं होता। किशोर-किशोरियां बाल्यावस्था तथा युवावस्था के बीच के अन्तर में खो जाते हैं। कई बार उन्हें बच्चा माना जाता है तथा कई बार उनके साथ युवाओं जैसा व्यवहार किया जाता है। अधिकतर बच्चों को उनके शारीरिक तथा बौद्धिक क्षमता के अनुसार निश्चित जिम्मेवारी वाला कार्य करने के अवसर उन्हें नहीं दिए जाते। इस तरह किशोरावस्था के दौरान जब उन्हें विस्तृत दुनिया का अनुभव होता है तब सामाजिक वातावरण उन परिवर्तनों से मेल नहीं खाता। उन्हें नए विचारों, नई धारणाओं तथा नए मूल्यों का सामना करना पड़ता है। अधिकतर किशोर-किशोरियां अधिक उत्तरदायित्व वाले मौकों का स्वागत करते हैं और अधिक स्वतन्त्र रहना चाहते हैं।

किशोर- किशोरियों में ये सारे विकास हारमोन्स सम्बन्धी परिणाम हैं जो उनमें भावनात्मक परिवर्तन को उत्तेजित करते हैं। जैसे ही किशोर शारीरिक रूप से परिपक्व होते हैं वैसे ही सामान्य रूप से उनमें दृढ़ अस्तित्व की भावना तथा अटूट आत्म विश्वास जाग जाता है।

भावनात्मक परिवर्तन विशेष तौर से उनके अस्तित्व, स्वरूप, आत्मसम्मान और अपनत्व की धारणा को प्रभावित करते हैं। किशोर-किशोरियां सामाजिक सम्बन्धों में भी अचानक कुछ व्यावहारिक परिवर्तनों का अनुभव करते हैं जैसे उनके अभिभावकों से, साथियों से और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण विपरीत लिंग से।

भावनात्मक विकास

किशोर अवस्था प्रायः अधिक उत्तेजना तथा भावनात्मक उथल-पुथल की अवधि मानी जाती है। इस अवस्था में उनके शरीर में बहुत से परिवर्तन आते हैं ये परिवर्तन हारमोन्स के कारण होते हैं। शरीर में हारमोन्स के बढ़ने से उनमें यौन विचार आते हैं परन्तु सामाजिक नियन्त्रण के कारण वे इन विचारों को वास्तविक रूप में प्रकट नहीं कर सकते। कई बार ऐसे विचारों के परिणाम स्वरूप लड़कों में वीर्य प्रवाह हो जाता है जिसे स्वप्नदोष कहते हैं। इस अवस्था में यह एक सामान्य बात है क्योंकि उन्हें इन बात का अनुभव नहीं होता अतः वे इस परिवर्तन को एकाएक समझ नहीं पाते और उन के व्यवहार में अनेक परिवर्तन हो जाते हैं।

वयःसंधि की अवस्था में किशोरों के भावना (चित्त) में जल्दी-जल्दी परिवर्तन आता है। उनके शरीर तथा विचारों में हुए परिवर्तनों के कारण उन्हें असुविधा और चिन्ता होती है। जिसके परिणामस्वरूप उनमें भावनात्मक तनाव उत्पन्न हो सकता है। उनके भाव में जल्दी-जल्दी परिवर्तन आते हैं जिनका अनुमान नहीं लगाया जा सकता। हारमोन्स के असंतुलन के कारण उनमें से कुछ में चिड़चिड़ापन, व्याकुलता, क्रोध तथा तनाव हो सकता है। यह सारी प्रक्रिया भावनात्मक रूप से तनावपूर्ण होती है जिससे उनके व्यवहार में अनेक प्रकार के परिवर्तन हो सकते हैं।

हालांकि, सामान्य तौर पर किशोरों में शारीरिक और भावनात्मक परिवर्तन स्पष्ट रूप से तनावपूर्ण नहीं होते जैसे कि साधारण रूप में समझे जाते हैं। किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न न हो, इसलिए बहुत से किशोर परिवर्तन और विकास के अनुरूप अपने को ढाल लेते हैं। यदि उन्हें इन परिवर्तनों और विकास के बारे में उचित जानकारी दी जाए ; तथा अभिभावक, अध्यापक तथा युवा वर्ग किशोरों की चिन्ताओं को मिलकर हल करें तथा उन्हें समर्थन दें तो इन परिवर्तनों का सामना उनके लिए आसान होगा। यह आवश्यक है कि घरों में, विद्यालय में और समुदाय में स्वस्थ भावनात्मक वातावरण बनाकर किशोरों को अपने भावों को प्रकट करने का अवसर प्रदान किया जाए।

अस्तित्व का विकास

वृद्धि की प्रक्रिया के दौरान किशोर स्वयं की पहचान तथा व्यक्तिगत अस्तित्व बनाने का प्रयास करता है। व्यक्तिगत अस्तित्व अपने आप में एक पूर्ण व्यक्ति के अनुरूप स्वयं को जानने की जागृति है। अस्तित्व की स्थापना एक धीमी प्रक्रिया है। प्रत्येक बच्चा अपने अनुरूप अपना अस्तित्व स्थापित करता है। परन्तु जब वह किशोरावस्था के चरण में प्रवेश करता है तो उसमें अचानक शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक परिवर्तन आते हैं जो उनके व्यक्तिगत अस्तित्व में बाधा डालते हैं। किशोरावस्था के प्रारम्भिक चरण में जैसे ही किशोर शारीरिक रूप से परिपक्व होने की प्रक्रिया से गुजरता है उसमें सामान्य तौर पर दृढ़ व्यक्तिगत अस्तित्व की भावना जागृत होती है और वह अपनी आवश्यकता, रुचि, योग्यता तथा कार्यों से सम्बन्धित निर्णय स्वयं लेता है या लेने का प्रयास करता है। प्रयोगीकरण के इस चरण में किशोर लिंग-अस्तित्व की भूमिका, सकारात्मक स्वरूप, आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास विकसित करने की अपेक्षा करता है।

सभी किशोरों में अस्तित्व बनाने की प्रक्रिया एक समान नहीं होती। उनमें से कुछ अपनी इच्छाओं, कार्यों की अभिलाषा या व्यवसाय की सन्तुष्टि के लिए विभिन्न विकल्पों को नहीं खोजते। वे जीवन में अधिक सुविधाजनक मान्यताओं तथा लक्ष्यों को अपनाते हैं। कुछ अपनी पहचान बनाने के लिए समय लेते हैं और वे युवा वर्ग की दुनिया में प्रचलित मूल्यों और धारणाओं के विभिन्न विकल्पों को खोजने का प्रयास अपनी योग्यता के अनुसार धीरे-धीरे अनिश्चितता का समाधान करते हुए करते हैं।

शारीरिक आकार

शारीरिक आकार एक व्यक्तिगत धारणा है अर्थात् एक किशोर या किशोरी का शरीर दूसरों को किस रूप में दिखता है तथा वह अपने के आकार को किस प्रकार महसूस करता है। यद्यपि शरीर का नाप, आकार, त्वचा का रंग, लम्बाई और अन्य लक्षण मुख्यतः वंश प्रभाव और प्राकृतिक वातावरण पर निर्भर करता है तथापि शरीर सम्बन्धी सोच पर सामाजिक और सांस्कृतिक तत्वों का प्रभाव भी होता है। रेडियो और टैलिविजन के माध्यम किशोरों की सोच को विशेष रूप से प्रभावित करते हैं। यदि उनके शरीर का आकार उनकी कल्पना के अनुसार एक आदर्श पुरुष या महिला की तरह न हो तो कई किशोरों के लिए यह एक चिन्ता का विषय बन जाता है। इसलिए उन्हें इस बात के लिए जागरूक करना बहुत आवश्यक है कि अपने शरीर को

जैसा भी है, स्वीकार करना चाहिए। उन्हें यह समझाना चाहिए कि बहुत सारे बच्चों में प्रारम्भिक किशोरावस्था में अस्थायी मोटापन होना सामान्य है।

आत्मसम्मान और आत्मविश्वास

किशोरावस्था में यह आवश्यक है कि वे इस अवस्था में अपना आत्मविश्वास तथा आत्मसम्मान बनाए रखें। बढ़ने की प्रक्रिया में दूसरे के बारे में अपनी सही समझ तथा सकारात्मक दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यक्ति के सामाजिक विकास का आधार आत्मसम्मान है। दूसरे अर्थ में आत्मविश्वास की कमी का परिणाम मूल्यहीन होना है।

आत्मधारणा का अर्थ है - व्यक्ति की अपने बारे में सोच। इसमें उसकी अपनी योग्यता, चरित्र, विचार, विशेषताएं, लक्षण आदि के बारे में सोच सम्मिलित है। यह मानवीय व्यवहार को निर्देशित करने वाली शक्ति है क्योंकि व्यक्ति आत्मधारणा के अनुरूप कार्य करता है। एक व्यक्ति जिसमें आत्मविश्वास है और जो अपने बारे में उच्च सोचता है - उसका व्यवहार एक आत्महीन, तुच्छ और असुरक्षित व्यक्ति की अपेक्षा भिन्न होता है। जैसे - एक व्यक्ति जो अपने को कमजोर पाठक मानता है, को यदि पढ़ने के लिए कहा जाए तो वह अनेक गलतियाँ करता है जिससे उसकी छवि एक कमजोर पाठक के रूप में उभरती है।

सामाजिक सम्बन्ध

किशोरावस्था के दौरान वृद्धि की प्रक्रिया का अति आलोचनात्मक पहलू या चिन्तनीय स्थिति है समाज से सम्बन्ध। किशोर का सामाजिक विकास - अभिभावकों से, सम आयु समूह (पीयर ग्रुप) से तथा विपरीत लिंग के साथ अपने सम्बन्धों की प्रगाढ़ता को पुनः परिभाषित करने से होता है। यद्यपि प्रत्येक बालक बचपन में ही सामाजिक सम्बन्धों का अनुभव करना शुरू करता है तथापि ये घर तक ही सीमित होता है। अधिकतर बच्चे पूर्ण रूप से देखभाल, सुरक्षा, मार्गदर्शन के लिए अभिभावकों पर निर्भर करते हैं। जैसे ही वे किशोरावस्था के चरण में पहुँचते हैं उनमें शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक परिवर्तन होता है।

अभिभावकों से बदलते सम्बन्ध

यद्यपि किशोर अपना बचपन पीछे छोड़ देते हैं परन्तु सारे अभिभावक चाहते हैं कि वे किशोरों की बच्चों की तरह देखभाल, सुरक्षा, और मार्गदर्शन करें तथा उन पर नियन्त्रण रखें। जबकि किशोर अभिभावकों की विशेष देख-रेख से मुक्ति चाहते हैं। वे घर पर अकेले रहना चाहते हैं। यह प्राथमिकता सामान्य है, परन्तु अभिभावकों को यह अच्छा नहीं लगता। स्वतन्त्रता के बारे में किशोरों का अभिभावकों से प्रायः टकराव होता है। किशोरों में आए इन परिवर्तनों को अभिभावक अपने आधिपत्य के खिलाफ समझते हैं। उनके विचारों को स्वीकार करने की अपेक्षा वे (अभिभावक) अपने विचारों को उन पर थोपने की कोशिश करते हैं। अभिभावक चिन्तित होते हैं क्योंकि वे सोचते हैं कि किशोर सही निर्णय लेने में समर्थ नहीं हैं। फलस्वरूप किशोरों में तनाव स्वाभाविक रूप से अभिभावकों की व्याकुलता के द्वारा ही उत्पन्न हो जाता है। जिन परिवारों में अभिभावकों का आधिपत्य होता है वहां पर किशोरों व अभिभावकों में टकराव स्वाभाविक है।

सामाजिक विकास उन परिवारों में आसान है जहां पर अभिभावक अपने किशोरों को स्नेह और विश्वास से देखते हैं। किशोरों को स्वतन्त्रता तथा आत्मनिर्देशन के अधिक अवसर दिए जाने की आवश्यकता है। उन पर नियन्त्रण आवश्यकता अनुसार ही होना चाहिए। अभिभावकों को अपने बच्चों पर विश्वास करना चाहिए तथा आवश्यकता अनुसार स्वतन्त्रता देनी चाहिए। जरूरत से ज्यादा सुरक्षा बच्चों में स्वतन्त्र रूप से कार्य करने में बाधा डालती है। विशेषज्ञ सुझाते हैं कि अभिभावकों से अलग रहने का किशोरों तथा अभिभावकों पर सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। अलग रहने से अभिभावकों तथा किशोरों में ज्यादा प्यार तथा स्नेह बना रहता है। ऐसा कोई भी ठोस प्रमाण नहीं है कि किशोरावस्था अभिभावकों के विरुद्ध विद्रोह की अवस्था है।

साथियों से सम्बन्ध

साथियों के साथ सम्बन्ध से किशोरों को सीखने तथा लोगों के साथ सामान्य व्यवहार करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार की योग्यता किशोरावस्था के दौरान परिपक्व होने की क्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह अपनी व्यक्तिगत प्रसिद्धि के रूप में अपना सामाजिक विकास मापता है। यदि उनके साथी उन्हें स्वीकार तथा पसन्द करते हैं तो वे सोचते हैं कि उनका विकास सामान्य रूप से हो रहा है। विपरीत लिंगी समूह में लोकप्रियता को किशोर अधिक महत्व देते हैं। इसलिए वे अपने रहन-सहन, पहरावे के ढंग, नेतृत्व की योग्यता आदि पर विशेष ध्यान देते हैं।

अधिकतर किशोर अपने साथी समूह से बहुत गहराई से जुड़ जाते हैं विशेषतः अपने निकट मित्रों के साथ। किशोर अपने साथियों की स्वीकृति चाहते हैं तथा इसके लिए वे अपने व्यवहार में परिवर्तन भी करते हैं। ये उनकी साथियों पर निर्भरता को बढ़ाता है। सामान्यतः किशोरों की प्रवृत्ति होती है कि उनकी मित्रता किशोर तथा किशोरियों दोनों से हो। आमतौर पर किशोर, किशोर को तथा किशोरियां, किशोरियों को प्राथमिकता देती हैं। साथियों के दबाव के कारण किशोरों पर कई प्रकार के नकारात्मक प्रभाव भी पड़ते हैं। ऐसा आमतौर पर देखा गया है कि अपने साथियों के दबाव के कारण ही कई किशोर धूम्रपान तथा अन्य मादक पदार्थों का प्रयोग करने लगते हैं।

विपरीत लिंगी की प्रशंसा

किशोरावस्था यौन परिपक्वता की एक अनोखी अवस्था है। यौन सामंजस्य किशोर की परिपक्वता एवं सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण भाग है। किशोरावस्था की दहलीज पर वह, यौन उत्तेजना अनुभव करता है जो कि एक प्राकृतिक व जैविक प्रवृत्ति है। किशोर इस अवधि में विपरीत लिंगी के प्रति विशेष रुचि व लगाव महसूस करते हैं व विपरीत लिंग के साथी बनाने में विशेष आनन्द महसूस करते हैं। लड़के व लड़की में एक दूसरे के प्रति आकर्षण एक सामान्य व व्यापक मानवीय व्यवहार है।

विपरीत लिंगी के साथ सम्बन्ध स्थापित करने की उत्सुकता पर सामाजिक नियंत्रण व नैतिक नियमों के परिणामस्वरूप किशोरों को अपनी यौन प्रवृत्ति के समाधान हेतु विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनमें विपरीत लिंगी के प्रति विशेष लगाव होता है। क्योंकि वे अपने यौन सम्बन्धी अभिवृत्तियों के विकास के बारे में अनभिज्ञ होते हैं तथा यौन सम्बन्धी विषयों में नये प्रयोग करने की तीव्र इच्छा होती है जिससे किशोरों में शारीरिक यौन आनन्द प्राप्त करने हेतु नकारात्मक (पैशाचिक प्रवृत्ति) व्यवहार उत्पन्न होता है। इसके परिणामस्वरूप किशोरियां छेड़-छाड़ का शिकार होती हैं तथा समाज में बलात्कार, यौन हिंसा जैसे अमानवीय कृत्य देखने को मिलते हैं

यौन-प्रवृत्ति मूल भावना है जिस पर मानव जाति की उत्पत्ति एवं विकास निहित है। यौन प्रवृत्ति केवल शारीरिक आनन्द प्राप्ति का साधन नहीं है अपितु व्यक्ति के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास हेतु सकारात्मक शक्ति है। यह स्त्री-पुरुष में स्नेह, आत्म-अनुभूति, जिम्मेदारियों को मिलकर स्वीकार करने की भावना, उनमें आपस में

रुचियों व विचारों के आदर की भावना उत्पन्न करने में एक सूत्र का कार्य करता है। यही कारण है कि समाज में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों पर निगरानी रखी जाती है। इसलिए परिवार के खुशहाली व व्यक्तिगत विकास हेतु स्त्री-पुरुष से यह अपेक्षा की जाती है कि वे समाज कल्याण के लिए समाज के नियमों का पालन करें।

उपर्युक्त संदर्भ में, स्त्री-पुरुष के मूलभूत सम्बन्धों को मद्देनजर रखते हुए किशोरों में विपरीत लिंगी के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न की जानी चाहिए। यौन भावना (सोच) किशोरों में विपरीत लिंगी के साथ मित्रता (घनिष्ठता) बनाने की आकांक्षा उत्पन्न करती है। विपरीत लिंगी के साथ घनिष्ठता हेतु शारीरिक सम्बन्ध आवश्यक नहीं है। विपरीत लिंगी को केवल यौन चिह्न (**Sex Symbol**) मानकर स्थाई मित्रता नहीं हो सकती। किशोरों को यह मानकर चलना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी योग्यता एवं मानवीय सौम्यता होती है। प्रत्येक किशोर सर्वप्रथम एक सभ्य व्यक्ति है तदुपरान्त कुछ और है। प्रत्येक व्यक्ति की मानवीय सौम्यता का सम्मान इस बात को आवश्यक बना देता है कि उसका शरीर भावना या चयन की पवित्रता में दृढ़ विश्वास हो। मानव शरीर चाहे वह स्त्री का हो या पुरुष का, अपने-अपने आन्तरिक गुणों के कारण चाहे वे शारीरिक या मानसिक हो, पूर्ण रूप से पवित्र है।

किशोर-किशोरियों में गहन आन्तरिक सम्बन्ध का एक अन्य महत्वपूर्ण आधार है स्नेह। अधिकांश किशोर और किशोरियां जब एक-दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं तो वे समझते हैं कि उन्हें प्यार हो गया है। वे साधारणतः उत्तेजना व प्यार में अन्तर करने में असफल होते हैं और शीघ्र अति शीघ्र शारीरिक स्तर पर यौन आनन्द प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। प्रायः यह पाया जाता है कि पुरुष शारीरिक आनन्द की अनुभूति प्राप्त करने हेतु प्यार के विभिन्न वायदे करता है परन्तु शारीरिक आनन्द भोग लेने के पश्चात सभी वायदों और स्वीकृतियों को भूला देता है। उपर्युक्त व्यवहार को देखने से यह महसूस होता है कि किशोर व किशोरियों का किशोरावस्था में एक दूसरे के प्रति गहन आकर्षण केवल शारीरिक आकर्षण के स्तर तक ही होता है जिसे प्यार की संज्ञा नहीं दी जा सकती है। वास्तविक प्यार की स्थिति में शारीरिक आनन्द व ऐन्द्रिय सुख नगण्य है।

विपरीत लिंगी के साथ सकारात्मक सम्बन्ध स्थापित करने के लिए यह अत्यधिक आवश्यक है कि दोनों एक दूसरे को समझें व एक-दूसरे की इच्छाओं का आदर करें। विशेषतः किशोरों को किशोरियों के अधिकार व भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। ऐसा तभी सम्भव है जब किशोर सामाजिक नियमों एवं स्तरों के अनुसार अपनी

यौन इच्छा को व्यक्त करना सीखें व सामाजिक नियमों के भीतर रहकर वैचारिक आदान-प्रदान करें। विपरीत लिंगी के साथ सकारात्मक आन्तरिक सम्बन्ध बनाने हेतु यौन प्रवृत्ति पर अंकुश आवश्यक है। आत्म-नियंत्रण का तात्पर्य है - आत्म-अनुशासन न कि यौन से इन्कार या ब्रह्मचार्य। यौन सम्बन्धी विषयों के प्रति किशोरों को न तो अपने हारमोन्स का दास होना चाहिए, न समआयु समूह के दबाव में आना चाहिए और न ही संचार माध्यमों का अनुकरण करना चाहिए। यौन सम्बन्धों के प्रति सकारात्मक व्यवहार अपनाने के लिए किशोरों को अपनी विभिन्न अभिरुचियों का सहारा लेना चाहिए ताकि वे खाली समय में इन अभिरुचियों में सलग्न हो कर अपने समय का सदुपयोग कर सकें।

प्रौढ़ों का किशोरावस्था के प्रति दृष्टिकोण (How Do Adults Perceive Adolescence)

किशोरों की समस्याएं तब अधिक गम्भीर हो जाती हैं जब उनके माता-पिता, और परिजन उनमें आने वाले परिवर्तनों को महत्त्व नहीं देते। उनका उचित मार्गदर्शन करने की अपेक्षा उन्हें गलत समझा जाता है। प्रौढ़ लोग अक्सर यह मानते हैं कि किशोरों को इस अवस्था में होने वाले परिवर्तनों को शीघ्रता से समझकर सामाजिक एवं सांस्कृतिक नियमों के अनुकूल स्वयं को ढाल लेना चाहिए। किन्तु जो समस्या एक प्रौढ़ को मामूली लगती है, वह एक किशोर के जीवन को गहरे तक प्रभावित करती है।

आज के प्रौढ़ अपने जीवन में इन्हीं अनुभवों और समस्याओं से गुजर चुके हैं क्योंकि युगों-युगों से इस अवस्था के यही लक्षण रहे हैं। हो सकता है कि हम में से कुछ एक ने इन परिवर्तनों को समझा न समझा हो या इनसे जूझते हुए किसी को यह आभास न होने दिया हो कि हम समस्या में हैं। परन्तु यह एक सत्य है कि किशोरों को सदैव से उनके इस अधिकार से वंचित रखा गया है कि इस अवस्था में होने वाले परिवर्तनों और विकास की वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर सकें। वे सब शारीरिक, भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तनों को अनुभव तो करते आए हैं, किन्तु इन समस्याओं को भली प्रकार से समझने के लिए उन्हें उचित जानकारी एवं मार्गदर्शन कभी नहीं मिला।

किशोरों की वर्तमान पीढ़ी के सम्मुख समस्याएं और भी अधिक गंभीर हैं क्योंकि वे ऐसे समाज में बड़े हो रहे हैं जो कि मूल रूप से उस समाज से भिन्न हैं जब उनके माता-पिता जवान थे। अधिकाधिक शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण हमारे समाज में निरन्तर परिवर्तन हो रहा है। व्यापक प्रसारण माध्यमों विशेषतया इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का व्यक्तिविशेष और सामाजिक जीवन पर इतना अधिक प्रभाव पड़ रहा है कि वे चिरकाल से संजोये गए मूल्यों, विश्वासों, परम्परागत मानदण्डों और प्राथमिकताओं का पुनरावलोकन करने पर बाध्य हो रहे हैं।

किशोरावस्था शिक्षा की आवश्यकता (Need for Adolescence Education)

वर्तमान में हमारी जनसंख्या का एक बड़ा भाग किशोरावस्था में है और कदाचित मानव सभ्यता के इतिहास में प्रौढ़ावस्था की ओर अग्रसर होने वालों की इतनी संख्या कभी न रही होगी। किन्तु उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताएं विशेषतया प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताएं पूर्णतया उपेक्षित रही हैं तथा उन्हें नगण्य समझा गया है। ज्यों ही वे किशोरावस्था की दहलीज पर कदम रखते हैं त्यों ही उन्हें प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य सम्बन्धी ठीक जानकारी मिल जानी चाहिए ताकि इस विशेष स्थिति से गुजरने के लिए वे मानसिक रूप से तैयार हों। इस संक्रमण काल से गुजरते हुए आने वाली समस्याओं से जूझने की उनमें पर्याप्त क्षमता विकसित होनी चाहिए। इस के लिए उन्हें अपनी समस्याओं पर सोचने के लिए स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। समस्या के आकलन के बाद उन्हें उचित मार्गदर्शन मिलना चाहिए ताकि वह औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ जीवन के दूसरे पहलुओं पर भी विचार कर सकें। इस प्रकार वे अपने निर्णय लेने में सक्षम हो सकेंगे तथा दायित्वपूर्ण जीवन-यापन कर सकेंगे।

इस प्रकार इस सन्दर्भ में उचित शैक्षिक हस्तक्षेप की महती आवश्यकता अनुभव की गई। भारत में तो यह आवश्यकता इसलिए भी अनुभव हुई क्योंकि भारत के विद्यालयी पाठ्यक्रम में ' किप्रयौस्वा ' - किशोरावस्था प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य जैसा यह गंभीर विषय अछूता ही रहा। जीव-विज्ञान विषय में यद्यपि प्रजनन तन्त्र का कुछ अंश अवश्य है। किन्तु जीव विज्ञान की सूचना मात्र से किसी व्यावहारिक उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती। किशोरावस्था में शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक

पहलुओं के साथ-साथ प्रजनन तन्त्र तथा यौन स्वास्थ्य की संवर्गपूर्ण जानकारी देने की आवश्यकता है। दीर्घावधि के गम्भीर चिन्तन द्वारा यह तथ्य उभर कर सामने आया है कि बढ़ती आयु के किशोर छात्रों को वृद्धि की प्रक्रिया तथा प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य की जानकारी दी जाए। उन्हें एच आई वी/एड्स (HIV/AIDS)] मादक पदार्थों का व्यसन आदि जो उनकी मनोवृत्ति, व्यवहार और मूल्य-संस्कारों को प्रभावित करते हैं, की समुचित जानकारी दी जाए ताकि वे उनसे बचाव के लिए उपयुक्त कौशलों का विकास सकें।

इससे पूर्व अधिकांश लोग इस विचार से सहमत नहीं थे कि पाठशाला पाठ्यचर्या में “किप्रयौस्वा” को शामिल किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में उनके विचार निम्नलिखित थे --

1. यौन तथा यौनाचार जैसे विषय एक दम निजी (व्यक्तिगत) होते हैं उनकी समूह में चर्चा करना भी ठीक नहीं और बच्चों के बीच तो ऐसी चर्चा करना और भी अनुचित है।
2. दूसरा मत यह है कि यदि किशोरों को यह जानकारी पाठशालाओं में दे दी जाए तो वे उत्सुकतावश इसका प्रायोगिक स्वरूप अपनाने लगेंगे जो कि स्वयं में एक खतरा है। किशोरों के असंयमित व स्वच्छन्द व्यवहार से पाठशाला व सामाज्य का वातावरण दूषित हो जाएगा।
3. यौन तथा यौनाचार की वार्ताएं मानवीय उदात्त भावनाओं को सांसारिक तुच्छ स्वरूप दे डालेंगी व भविष्य में किशोर वय छात्र इन उदात्त भावनाओं की आवश्यकता व महत्त्व की सराहना नहीं कर सकेंगे।

विद्यालयों में किशोरावस्था शिक्षा को लागू करने से पहले सहमति बनाने की प्रक्रिया में उपर्युक्त बातों पर विचार-विनिमय किया गया और पाया गया कि इन तर्कों में कोई सार नहीं है। कारण यह है कि :

1. विभिन्न अध्ययनों से यह तथ्य उभर कर सामने आया है कि किशोर यौन विकास के संबंध में उचित जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। किन्तु क्योंकि हमारे समाज में यौन विषयों पर बातचीत करना वर्जित है अतः उनको इस सम्बन्ध में ऐसा विश्वसनीय स्रोत नहीं मिल पाता जिससे उन्हें वांछित जानकारी उपलब्ध हो सके। ऐसे में किशोरवय बालक, बालिकाओं में बढ़ने की प्रक्रिया के संबंध में अनेक प्रकार की चिंताएं तथा भ्रान्तियां पैदा हो जाती हैं जिससे उनके मन-मस्तिष्क में अवास्तविक एवं मिथ्या धारणाएं घर कर लेती हैं। ये अवास्तविक एवं मिथ्या धारणाएं उनकी प्रौढ़ावस्था में भी प्रवेश कर जाती हैं जिससे भावी जीवन में उनकी मनोवृत्तियों और व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
2. क्योंकि विवाह की आयु बढ़ रही है तथा वयःसंधि की अवस्था अपेक्षाकृत कम आयु में आ रही है अतः यौन परिपक्वता और विवाह के बीच का अंतराल बढ़ गया है। इस स्थिति में विवाह-पूर्व यौन सम्बन्ध स्थापित करने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। विभिन्न सांस्कृतिक परिवेशों में किए गए अध्ययनों से यह पता चला है कि किशोरों में विवाह-पूर्व यौनाचार की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ रही है। इसके बड़े गंभीर परिणाम होंगे और एच आई वी संक्रमण का खतरा और अधिक बढ़ेगा। इसलिए पाठशाला पाठ्यचर्या में यौन-शिक्षा को सम्मिलित करना आवश्यक समझा गया है ताकि छात्र यौन विकास की प्रक्रिया को समझ कर यौन के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास कर सकें।
3. प्रचार व प्रसार माध्यमों में भी समाज में बढ़ रहे यौन अपराधों के समाचारों की चर्चा नित्य प्रति देखने को मिलती है। किशोर लड़कियों व नर्हीं अबोध बालिकाओं के प्रति यौन - शोषण तथा बलात्कार की घटनाएं आम होती जा रही हैं जो कि और भी अधिक चिंता का विषय है। इन स्थितियों में शिक्षा द्वारा हस्तक्षेप आज की मांग है ताकि किशोरवय बालक/बालिकाएं यौन विकास का तात्पर्य समझ सकें, प्रत्येक व्यक्ति की पवित्रता का सम्मान करें तथा ऐसे अमानवीय व्यवहार से स्वयं को बचा सकें।
4. पहले परम्परागत मूल्य और संस्कार मानवीय जीवन को दूर तक प्रभावित करते थे। इन मूल्यों और संस्कारों से व्यक्ति का यौन व्यवहार स्वयं ही संयमित और नियंत्रित होता था। किन्तु सामाजिक विकास के कारण शहरीकरण, गांवों से शहर की ओर पलायन और शहरों में गंदी-बस्तियों के बन जाने से मनुष्य की जीवन-शैली में परिवर्तन हुआ है। अतः उन प्राचीन सामाजिक और

सांस्कृतिक मूल्यों को पुनः संवलित करने की आवश्यकता है ताकि उत्तरदायित्व-विहीन यौन-व्यवहार को नियंत्रित किया जा सके।

5. आजकल प्रचार और प्रसार के अनेक माध्यमों यथा-सिनेमा, फिल्म पत्रिकाओं, विडियो-पार्लर, व्यापारिक विज्ञापन, दूरदर्शन द्वारा प्रसारित स्वदेशी-विदेशी चैनलों के माध्यम से यौन संबंधी विविध सामग्री अपरिष्कृतरूप में परोसी जाती है। समाचार-पत्रों में भी ऐसी सामग्री विशेष रूप से प्रकाशित की जाती है। ऐसी सामग्री के प्रसारण को पूर्णतया प्रतिबंधित भी नहीं किया जा सकता। अतः यह अपरिहार्य है कि किशोरों को यौन शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए ताकि उन्हें यौन सम्बन्धी पहलुओं की उचित जानकारी मिल सके।
6. एड्स जैसे विश्वव्यापी रोग ने भी पाठशालाओं में किशोरावस्था शिक्षा को प्रारम्भ करने की आवश्यकता को अपरिहार्य बना दिया है। यद्यपि एच आई वी विषाणु $\frac{1}{4}$ Virus $\frac{1}{2}$ एड्स का मुख्य कारण है और यह रक्त द्वारा संचारित होता है तथा संक्रमित माँ से बच्चों तक पहुँचता है। किन्तु इसके संचरण का मुख्य कारण प्रायः यौन सम्बन्ध ही होता है। मादक द्रव्यों के सेवन के अभ्यस्त लोगों द्वारा सीरिज और सूई के परस्पर प्रयोग से एच आई वी संक्रमण का खतरा और भी बढ़ जाता है। एच. आई.वी. संक्रमण के संदर्भ में उपलब्ध आंकड़ों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस संक्रमण से ग्रस्त व्यक्तियों में युवाओं की संख्या काफी अधिक है। क्योंकि एच आई वी संक्रमण और एड्स के रोग के लिए अभी तक कोई भी वैक्सीन अथवा औषधि उपलब्ध नहीं है अतः शिक्षा ही एक मात्र ऐसा माध्यम है जिससे व्यवहारगत परिवर्तन लाकर एच. आई.वी. संक्रमण से बचाव किया जा सकता है।
7. भारत के कई भागों में धुम्रपान, तम्बाकू का प्रयोग, शराब व अन्य नशीले पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति भी अत्यधिक चिंता का विषय है। युवा पीढ़ी इन व्यसनों को अपने युवा होने के अहसास से जोड़ती है। अतः इस बात की महती आवश्यकता है कि नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी देकर किशोरों को इन व्यसनों के प्रति सचेत किया जाए।
8. किशोरावस्था शिक्षा के उद्देश्य को सही परिप्रेक्ष्य में न समझ पाने के कारण अभिभावकों में इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने के सम्बन्ध में निरर्थक आशंकाएं पैदा हुई हैं। किन्तु शोधों से ये स्पष्ट हुआ है कि 'क्रिप्रयौस्वा' की शिक्षा से

छात्र इसके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर अनावश्यक प्रयोग नहीं करते बल्कि यौन के विषय में उनका स्वस्थ दृष्टिकोण बनता है और उनका व्यवहार भी उत्तरोत्तर उत्तरदायित्वपूर्ण हो जाता है।

9. अध्यापक-वर्ग में भी यह आंशका व्याप्त है कि इस विषय को स्कूल में पढ़ाए जाने से उनकी छवि धूमिल हो सकती है और विद्यार्थियों में भी अनुशासनहीनता बढ़ सकती है। किन्तु अनुभव बताते हैं कि यह आंशका आधारहीन है। वस्तुतः जहां शिक्षकों ने यौन शिक्षा के प्रति रुचि दिखाई है तथा इस सम्बन्ध में विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन किया है वहां शिक्षक-छात्र संबंधों तथा पाठशालाओं के वातावरण में सुधार आया है।
10. भारत में किशोर वय बालक/बालिकाओं को यौन संबंधी जानकारी विभिन्न स्रोतों यथा मित्रों तथा अपने-अपने सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश से प्राप्त होती है। यह जानकारी सर्वथा अधूरी होती है और ऐसी अधूरी जानकारी से कई बार किशोरों में कई प्रकार की मनोग्रंथियां बन जाती हैं जिसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। अतः भारतीय पाठशालाओं में ऐसे शैक्षणिक कार्यक्रम को चलाने की महती आवश्यकता अनुभव की गई। किशोरावस्था शिक्षा को पाठशालाओं में पढ़ाए जाने के संबंध में समाज विशेषतया अभिभावकों और अध्यापकों की सोच में काफी परिवर्तन हुआ है। सर्वेक्षणों से यह प्रमाणित हो गया है कि किशोर-शिक्षा को पाठशालाओं में लागू करने के लिए अभिभावक और अध्यापक अब पूर्णतया सहमत हैं।

किशोरावस्था शिक्षा क्या है ?

(What is Adolescence Education)

किशोरावस्था शिक्षा किशोरों की उनके प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य (किप्रयौस्वा) सम्बन्धी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक शैक्षणिक प्रतिक्रिया है। लेकिन इसमें प्रजनन स्वास्थ्य के सभी पहलुओं का समावेश नहीं हो सका है। वर्तमान स्कूली पाठ्यचर्या में किशोरों से सम्बन्धित अनेक पहलुओं का पहले से ही समावेश है। अतः किशोरावस्था शिक्षा के व्यापक प्रारूप में उन्हीं पहलुओं को समाविष्ट किया गया है जो निर्धारित पाठ्यक्रम में शामिल नहीं है। किशोरावस्था शिक्षा के तीन प्रमुख घटक हैं-

1. बड़े होने की प्रक्रिया (Process of Growing up)

2. एच. आई. वी. संक्रमण व एड्स (H I V Infection and AIDS)
- 3. मादक पदार्थों का व्यसन (Drug Abuse)

1. बड़े होने की प्रक्रिया : (Process of Growing up)

इस घटक के अन्तर्गत वे विषय आते हैं जो बच्चों के बड़े होने और प्रौढ़ बनने की प्रक्रिया से सम्बद्ध हैं। इनमें शारीरिक वृद्धि एवं विकास जैसे गौण यौन लक्षण भी आ जाते हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक विकास, किशोरों का अपने माता-पिता, सम आयु समूह और विपरीत लिंगी के साथ सम्बन्ध, लैंगिक भूमिका आदि विषय भी इसके अंतर्गत आते हैं। इसके साथ-साथ यौन-संचारित रोगों के संबंध में भी प्रसंगत: जानकारी दी गई है।

एच आई वी संक्रमण व एड्स (HIV Infection and AIDS)

इस भाग के अंतर्गत एच आई वी संक्रमण और एड्स के कारणों और परिणामों की जानकारी देते हुए इस विषय में अपनाई जाने वाली सावधानियों, एच आई वी संक्रमित व एड्स ग्रस्त रोगी के प्रति व्यक्तिगत व सामाजिक दायित्वों को भी रेखांकित किया गया है ताकि एच आई वी संक्रमण को रोका जा सके और संक्रमित व्यक्ति की समाज में उपेक्षा न हो।

मादक पदार्थों का व्यसन (Drug Abuse)

इस भाग में उन परिस्थितियों का आलेख है जिसमें एक किशोर मादक पदार्थों के व्यसन का शिकार बनता है। मादक पदार्थों के सेवन के परिणामों, रोकथाम के उपायों के साथ व्यसनी व्यक्ति के इलाज व पुर्नवास के संबंध में भी चर्चा की गई है।

किशोरावस्था शिक्षा के लक्ष्य

(Objectives of Adolescence Education)

किशोरवस्था शिक्षा के निम्न उद्देश्य हैं -

1. विद्यार्थियों को किशोर प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य (किप्रयौस्वा), एच आई वी संक्रमण, एड्स व मादक पदार्थों के व्यसनो के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करना।
2. उनमें “किप्रयौस्वा” से सम्बद्ध विषयों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण उत्पन्न करना, और उन्हें विपरीत लिंगी के प्रति आदर तथा उत्तरदायित्वपूर्ण यौन व्यवहार के लिए प्रोत्साहित करना।
3. उनमें ‘किप्रयौस्वा’ से संबद्ध समस्याओं के समाधान हेतु उचित प्रबंधन कौशल का निर्माण करना।

संस्थागत नीतियां (Strategies for Institutionalization)

किशोरावस्था शिक्षा को स्कूल शिक्षा की विषय सामग्री और प्रक्रिया में प्रभावशाली रूप से एकीकृत करने के लिए निम्न नीतियां अपनाई जा रही हैं -

1. जागरूकता निर्माण (Awareness Building)

सबसे पहली आवश्यकता स्कूलों में किशोर शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता के प्रति एक अनुकूल वातावरण बनाना है। इसके लिए नीति निर्धारकों, मत-निर्माताओं, प्रचार-प्रसार माध्यमों, पाठ्यचर्या बनाने वालों शिक्षकों-प्रशिक्षकों, अध्यापकों व अभिभावकों के मध्य उचित संवाद स्थापित करने के लिए विविध जागरूकता गतिविधियों की आवश्यकता है।

2. स्कूली पाठ्यचर्या में एकीकरण (Integration in School Curriculum)

किशोरशिक्षा प्रभावकारी रूप से तभी प्रदान की जा सकती है जब इसकी विषय-वस्तु को स्कूली पाठ्यचर्या में समेकित किया जाए। किशोर-शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति से जुड़े विषय जीवन के विविध पहलुओं से संबद्ध हैं। अतः स्कूली पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन आवश्यक है ताकि इसमें किशोर शिक्षा से जुड़े विविध पहलुओं के समावेश की सम्भावना का पता लगाया जा सके और जब भी पाठ्यक्रम में संशोधन किया जाए तो उन तत्वों का पाठ्यपुस्तकों में

समावेश हो सके। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा सन् 2000 में विकसित राष्ट्रीय पाठ्यचर्या प्रारूप में इस विषय की झलक ला कर एक शुरुआत तो की जा चुकी है। कई प्रान्तों ने इन विषयों को स्कूली पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों में शामिल करने के लिए उचित कदम उठाए हैं। इन्हें शिक्षक-शिक्षा पाठ्यचर्या में शामिल किया जाना शेष है।

3. पाठ्य सहभागी गतिविधियां (Co-Curricular Activities)^{1/2}

किशोर शिक्षा के विषयों को पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में समेकित करने में अभी समय लगेगा क्योंकि पाठ्यक्रम के पुनरावलोकन को एक लंबी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। किन्तु किशोर-शिक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण विषय को तब तक टाला नहीं जा सकता। अतः पाठ्यसहभागी शिक्षण अधिगम की विधि को अपनाकर इसकी शिक्षा प्रारंभ करना अत्यंत आवश्यक है। किशोर शिक्षा सम्बन्धी पाठ्य-सहभागी गतिविधियों का स्कूलों में आयोजन किया जाना चाहिए। विभिन्न गतिविधियां जैसे - प्रश्न-पेटी, सामूहिक परिचर्चा, मूल्यांकन का स्पष्टीकरण, भूमिका-अभिनय, वैयक्तिक-अध्ययन, पोस्टर/चित्रकला- प्रतियोगिता, निबन्ध-प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी-प्रतियोगिता इत्यादि गतिविधियां विद्यार्थियों को न केवल पर्याप्त जानकारी देने में बल्कि उनके अन्दर सही व दायित्वपूर्ण व्यवहार उत्पन्न करने में बहुत प्रभावकारी सिद्ध हो सकती हैं।² इन गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों में उचित कौशल विकसित किया जा सकता है।

2 किशोरवस्था शिक्षा से सम्बद्ध पाठ्यसहभागी गतिविधियों की विस्तृत जानकारी के लिए देखें: स्कूलों में किशोर शिक्षा : मूल सामग्री का संवैष्टन, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली-1999